चकमक
बाल विज्ञान पत्रिका • अक्टूबर 2009

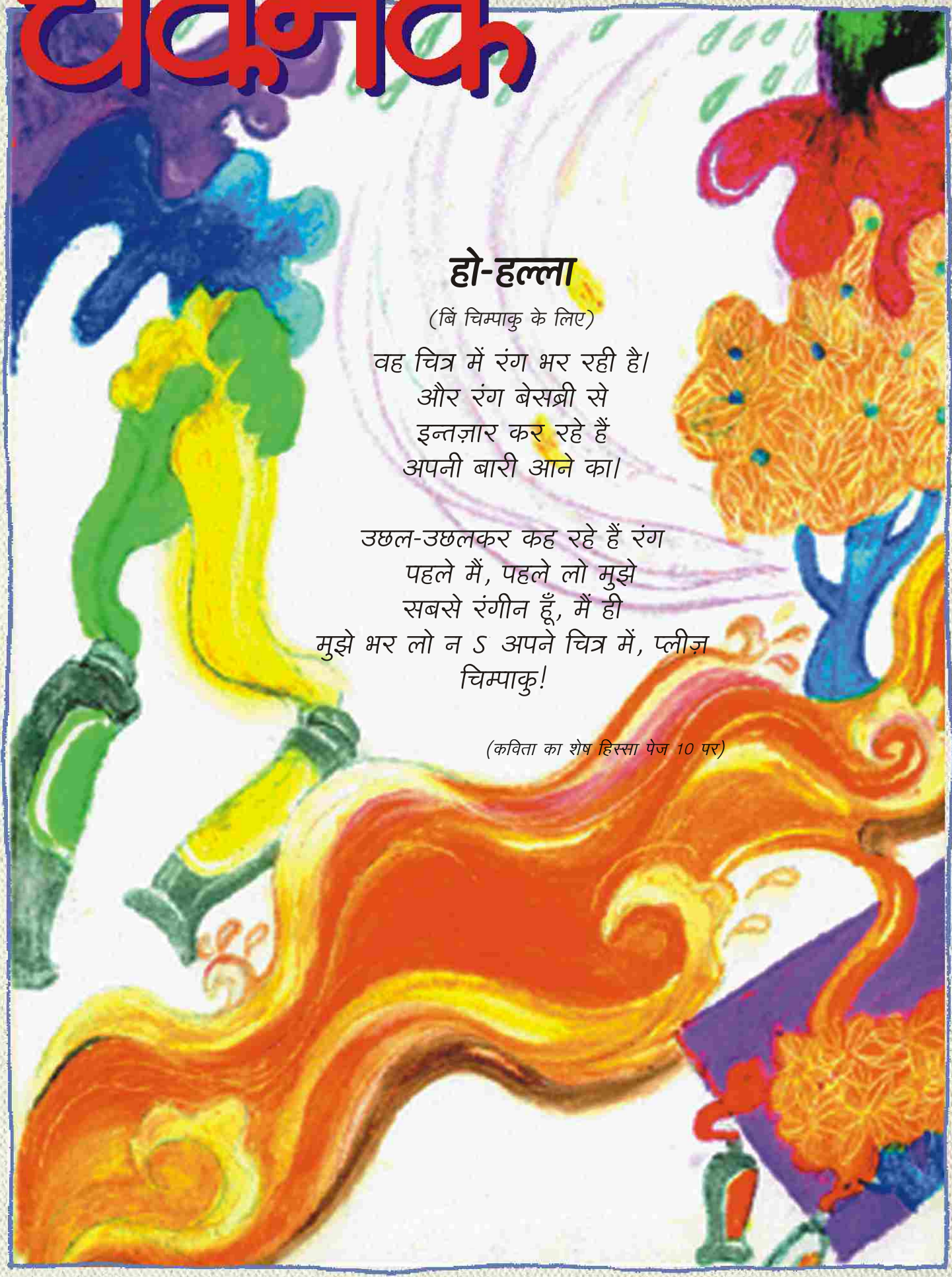

हो-हल्ला

(बिं चिम्पाकु के लिए)

वह चित्र में रंग भर रही है।
और रंग बेसब्री से
इन्तज़ार कर रहे हैं
अपनी बारी आने का।

उछल-उछलकर कह रहे हैं रंग
पहले मैं, पहले लो मुझे
सबसे रंगीन हूँ, मैं ही
मुझे भर लो न ऽ अपने चित्र में, प्लीज़
चिम्पाकु!

(कविता का शेष हिस्सा पेज 10 पर)